



BUNTY PARSAD

15 Oct 1991

03:40 AM

Ramgarh

Model: Web-MyKundli

Order No: 119139901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 14-15/10/1991
दिन _____: सोम-मंगलवार
जन्म समय _____: 03:40:00 घंटे
इष्ट _____: 54:48:40 घटी
स्थान _____: Ramgarh
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:37:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:32:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:12:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 03:52:08 घंटे
वेलान्तर _____: 00:13:50 घंटे
साम्पातिक काल _____: 05:23:56 घंटे
सूर्योदय _____: 05:44:31 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:23:19 घंटे
दिनमान _____: 11:38:47 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 27:19:08 कन्या
लग्न के अंश _____: 28:00:04 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: पूर्वाषाढा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: अतिगण्ड
करण _____: वणिज
गण _____: मनुष्य
योनि _____: वानर
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: धा-धर्मेन्द्र
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1913	आश्विन	23
पंजाबी	संवत : 2048	आश्विन	29
बंगाली	सन् : 1398	आश्विन	28
तमिल	संवत : 2048	पुरुटासी	29
केरल	कोल्लम : 1167	कन्नी	29
नेपाली	संवत : 2048	आश्विन	29
चैत्रादि	संवत : 2048	आश्विन	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2048	आश्विन	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
तिथि समाप्ति काल _____ : 07:08:49
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 16:59:10 घंटे
जन्म योग _____ : पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग _____ : शोभन
योग समाप्ति काल _____ : 10:21:39 घंटे
जन्म योग _____ : अतिगण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैतिल
करण समाप्ति काल _____ : 07:08:49 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 26:42:05
भभोग _____ : 67:45:50
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 12 वर्ष 1 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____ : श्रावण
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : भरणी
योग _____ : वज्र
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : धनु
सूर्य _____ : तुला
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : वृश्चिक
बुध _____ : सिंह
गुरु _____ : धनु
शुक्र _____ : कुम्भ
शनि _____ : कन्या
राहु _____ : कुम्भ

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

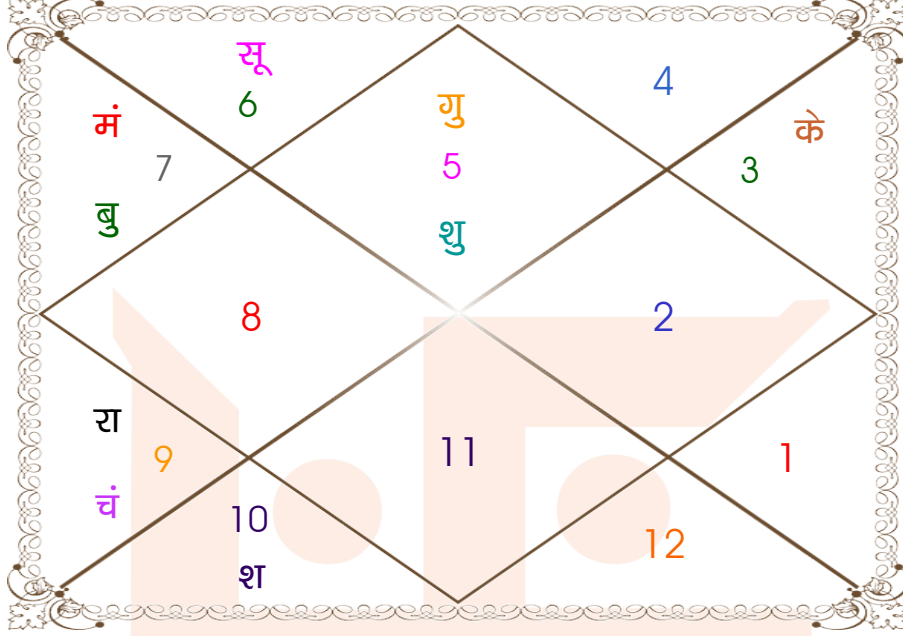
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

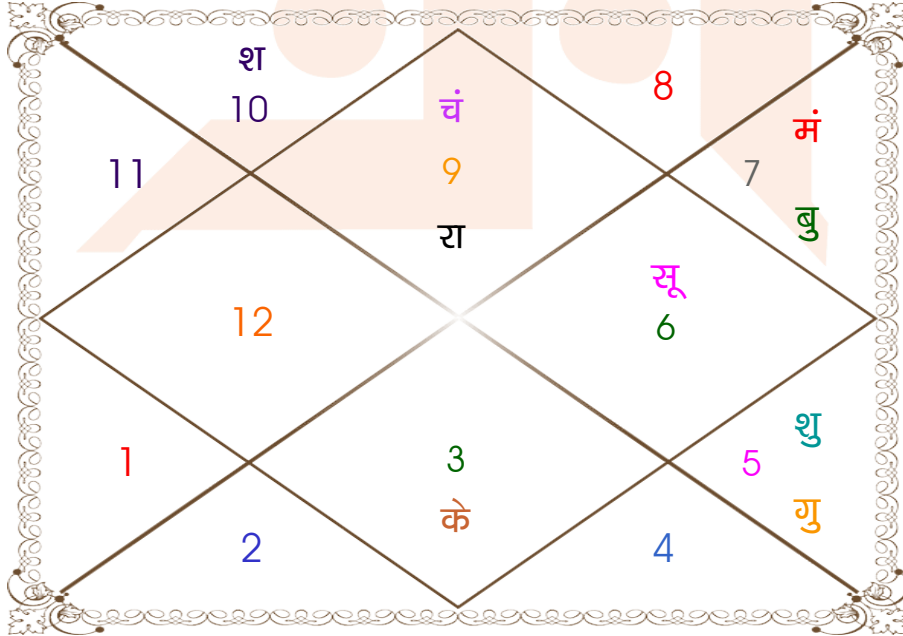
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

			के
श			शु ल गु
रा चं		बु मं	सू

लग्न कुंडली

के		
		श
गु ल शु	मं बु	चं रा

विंशोत्तरी
शुक्र 12वर्ष 1मा 9दि
शुक्र

15/10/1991

25/11/2103

शुक्र	24/11/2003
सूर्य	23/11/2009
चन्द्र	24/11/2019
मंगल	24/11/2026
राहु	23/11/2044
गुरु	23/11/2060
शनि	24/11/2079
बुध	23/11/2096
केतु	25/11/2103

योगिनी
सिद्धा 4वर्ष 2मा 26दि
सिद्धा

09/01/2025

10/01/2032

सिद्धा	21/05/2026
संकटा	10/12/2027
मंगला	19/02/2028
पिंगला	10/07/2028
धान्या	08/02/2029
भ्रामरी	20/11/2029
भद्रिका	10/11/2030
उल्का	10/01/2032

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

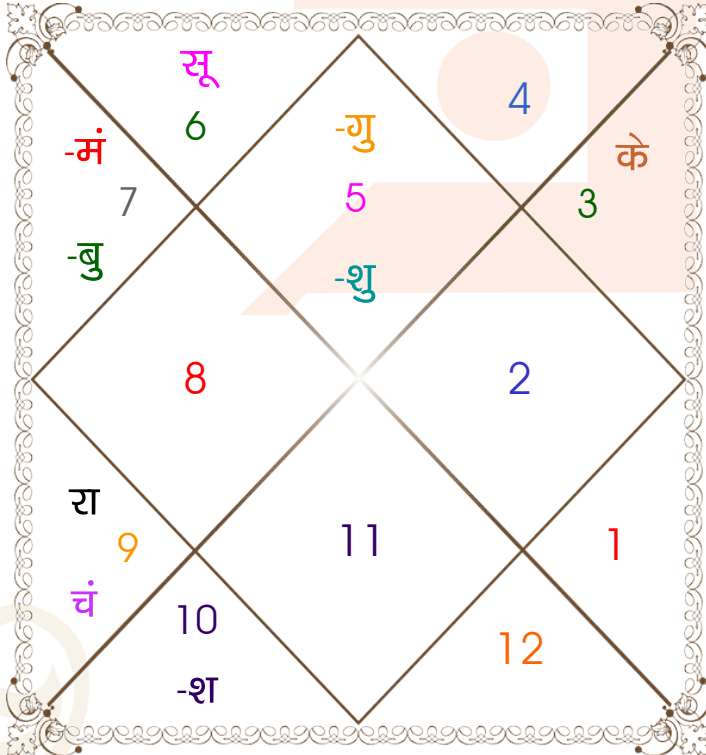
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	28:00:04	330:08:35	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	---
सूर्य			कन्या	27:19:08	00:59:27	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	सम राशि
चंद्र			धनु	18:35:36	11:48:22	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
मंगल	अ		तुला	04:59:24	00:40:28	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	सम राशि
बुध	अ		तुला	05:11:13	01:37:07	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	मित्र राशि
गुरु			सिंह	12:47:18	00:11:00	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मित्र राशि
शुक्र			सिंह	12:16:34	00:48:39	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	शत्रु राशि
शनि			मक	06:31:37	00:00:59	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	स्वराशि
राहु	व		धनु	19:53:33	00:00:02	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	नीच राशि
केतु	व		मिथु	19:53:33	00:00:02	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	मंगल	नीच राशि
हर्ष			धनु	16:21:58	00:01:18	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
नेप			धनु	20:20:17	00:00:37	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
प्लूटो			तुला	25:24:13	00:02:12	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
दशम भाव			वृष	27:58:27	--	मृगशिरा	--	5	शुक्र	मंगल	शनि	--

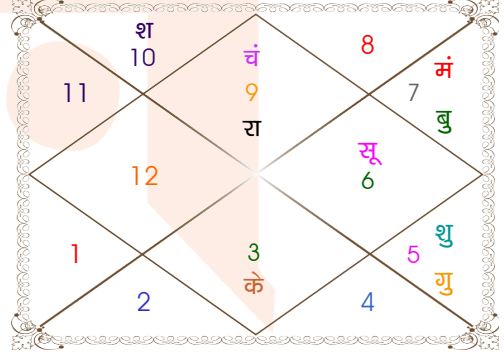
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:44:48

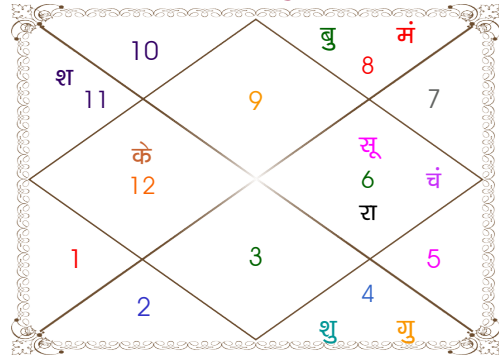
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 12:59:48	सिंह 28:00:04
2	कन्या 12:59:48	कन्या 27:59:32
3	तुला 12:59:16	तुला 27:59:00
4	वृश्चिक 12:58:43	वृश्चिक 27:58:27
5	धनु 12:58:43	धनु 27:59:00
6	मकर 12:59:16	मकर 27:59:32
7	कुम्भ 12:59:48	कुम्भ 28:00:04
8	मीन 12:59:48	मीन 27:59:32
9	मेष 12:59:16	मेष 27:59:00
10	वृष 12:58:43	वृष 27:58:27
11	मिथुन 12:58:43	मिथुन 27:59:00
12	कर्क 12:59:16	कर्क 27:59:32

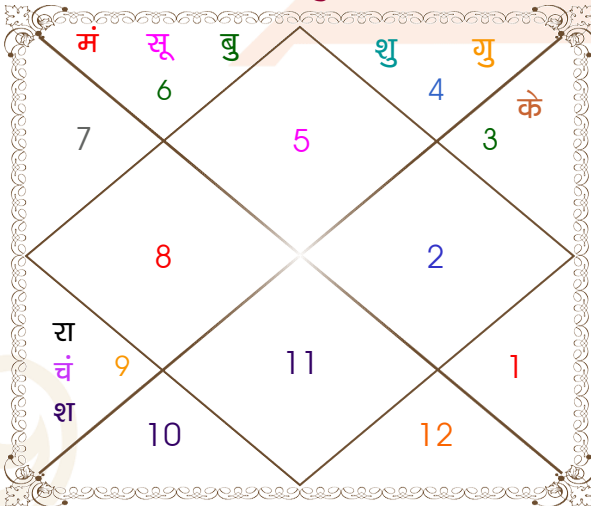
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	28:00:04
2	कन्या	26:28:12
3	तुला	26:57:59
4	वृश्चिक	27:58:27
5	धनु	28:45:33
6	मकर	29:02:30
7	कुम्भ	28:00:04
8	मीन	26:28:12
9	मेष	26:57:59
10	वृष	27:58:27
11	मिथुन	28:45:33
12	कर्क	29:02:30

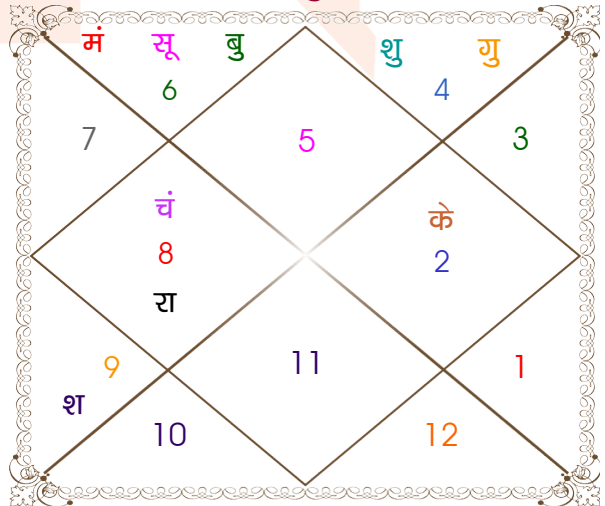
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 12 वर्ष 1 मास 9 दिन

शुक्र 20 वर्ष 15/10/1991 24/11/2003	सूर्य 6 वर्ष 24/11/2003 23/11/2009	चंद्र 10 वर्ष 23/11/2009 24/11/2019	मंगल 7 वर्ष 24/11/2019 24/11/2026	राहु 18 वर्ष 24/11/2026 23/11/2044
00/00/0000	सूर्य 12/03/2004	चंद्र 24/09/2010	मंगल 21/04/2020	राहु 06/08/2029
00/00/0000	चंद्र 11/09/2004	मंगल 25/04/2011	राहु 09/05/2021	गुरु 30/12/2031
00/00/0000	मंगल 17/01/2005	राहु 24/10/2012	गुरु 15/04/2022	शनि 05/11/2034
15/10/1991	राहु 12/12/2005	गुरु 23/02/2014	शनि 25/05/2023	बुध 25/05/2037
राहु 23/01/1994	गुरु 30/09/2006	शनि 24/09/2015	बुध 21/05/2024	केतु 12/06/2038
गुरु 23/09/1996	शनि 12/09/2007	बुध 22/02/2017	केतु 17/10/2024	शुक्र 12/06/2041
शनि 24/11/1999	बुध 18/07/2008	केतु 23/09/2017	शुक्र 18/12/2025	सूर्य 07/05/2042
बुध 24/09/2002	केतु 23/11/2008	शुक्र 25/05/2019	सूर्य 24/04/2026	चंद्र 06/11/2043
केतु 24/11/2003	शुक्र 23/11/2009	सूर्य 24/11/2019	चंद्र 24/11/2026	मंगल 23/11/2044
गुरु 16 वर्ष 23/11/2044 23/11/2060	शनि 19 वर्ष 23/11/2060 24/11/2079	बुध 17 वर्ष 24/11/2079 23/11/2096	केतु 7 वर्ष 23/11/2096 25/11/2103	शुक्र 20 वर्ष 25/11/2103 00/00/0000
गुरु 11/01/2047	शनि 27/11/2063	बुध 21/04/2082	केतु 21/04/2097	शुक्र 26/03/2107
शनि 25/07/2049	बुध 06/08/2066	केतु 19/04/2083	शुक्र 21/06/2098	सूर्य 26/03/2108
बुध 30/10/2051	केतु 15/09/2067	शुक्र 16/02/2086	सूर्य 27/10/2098	चंद्र 24/11/2109
केतु 05/10/2052	शुक्र 14/11/2070	सूर्य 24/12/2086	चंद्र 28/05/2099	मंगल 24/01/2111
शुक्र 06/06/2055	सूर्य 27/10/2071	चंद्र 24/05/2088	मंगल 24/10/2099	राहु 16/10/2111
सूर्य 25/03/2056	चंद्र 28/05/2073	मंगल 22/05/2089	राहु 12/11/2100	00/00/0000
चंद्र 25/07/2057	मंगल 07/07/2074	राहु 09/12/2091	गुरु 19/10/2101	00/00/0000
मंगल 30/06/2058	राहु 12/05/2077	गुरु 16/03/2094	शनि 28/11/2102	00/00/0000
राहु 23/11/2060	गुरु 24/11/2079	शनि 23/11/2096	बुध 25/11/2103	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 12 वर्ष 1 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र 17/10/2024 18/12/2025	मंगल - सूर्य 18/12/2025 24/04/2026	मंगल - चंद्र 24/04/2026 24/11/2026	राहु - राहु 24/11/2026 06/08/2029	राहु - गुरु 06/08/2029 30/12/2031
शुक्र 28/12/2024 सूर्य 18/01/2025 चंद्र 22/02/2025 मंगल 19/03/2025 राहु 22/05/2025 गुरु 18/07/2025 शनि 23/09/2025 बुध 23/11/2025 केतु 18/12/2025	सूर्य 24/12/2025 चंद्र 04/01/2026 मंगल 11/01/2026 राहु 30/01/2026 गुरु 16/02/2026 शनि 09/03/2026 बुध 27/03/2026 केतु 03/04/2026 शुक्र 24/04/2026	चंद्र 12/05/2026 मंगल 25/05/2026 राहु 26/06/2026 गुरु 24/07/2026 शनि 27/08/2026 बुध 26/09/2026 केतु 08/10/2026 शुक्र 13/11/2026 सूर्य 24/11/2026	राहु 20/04/2027 गुरु 30/08/2027 शनि 02/02/2028 बुध 21/06/2028 केतु 17/08/2028 शुक्र 29/01/2029 सूर्य 19/03/2029 चंद्र 09/06/2029 मंगल 06/08/2029	गुरु 01/12/2029 शनि 18/04/2030 बुध 21/08/2030 केतु 11/10/2030 शुक्र 06/03/2031 सूर्य 19/04/2031 चंद्र 01/07/2031 मंगल 21/08/2031 राहु 30/12/2031
राहु - शनि 30/12/2031 05/11/2034	राहु - बुध 05/11/2034 25/05/2037	राहु - केतु 25/05/2037 12/06/2038	राहु - शुक्र 12/06/2038 12/06/2041	राहु - सूर्य 12/06/2041 07/05/2042
शनि 12/06/2032 बुध 07/11/2032 केतु 06/01/2033 शुक्र 29/06/2033 सूर्य 20/08/2033 चंद्र 15/11/2033 मंगल 14/01/2034 राहु 19/06/2034 गुरु 05/11/2034	बुध 17/03/2035 केतु 11/05/2035 शुक्र 13/10/2035 सूर्य 28/11/2035 चंद्र 14/02/2036 मंगल 08/04/2036 राहु 26/08/2036 गुरु 28/12/2036 शनि 25/05/2037	केतु 16/06/2037 शुक्र 19/08/2037 सूर्य 07/09/2037 चंद्र 09/10/2037 मंगल 31/10/2037 राहु 28/12/2037 गुरु 17/02/2038 शनि 19/04/2038 बुध 12/06/2038	शुक्र 12/12/2038 सूर्य 05/02/2039 चंद्र 07/05/2039 मंगल 10/07/2039 राहु 21/12/2039 गुरु 15/05/2040 शनि 05/11/2040 बुध 09/04/2041 केतु 12/06/2041	सूर्य 28/06/2041 चंद्र 26/07/2041 मंगल 14/08/2041 राहु 02/10/2041 गुरु 15/11/2041 शनि 06/01/2042 बुध 22/02/2042 केतु 13/03/2042 शुक्र 07/05/2042
राहु - चंद्र 07/05/2042 06/11/2043	राहु - मंगल 06/11/2043 23/11/2044	गुरु - गुरु 23/11/2044 11/01/2047	गुरु - शनि 11/01/2047 25/07/2049	गुरु - बुध 25/07/2049 30/10/2051
चंद्र 21/06/2042 मंगल 23/07/2042 राहु 13/10/2042 गुरु 25/12/2042 शनि 22/03/2043 बुध 08/06/2043 केतु 10/07/2043 शुक्र 09/10/2043 सूर्य 06/11/2043	मंगल 28/11/2043 राहु 24/01/2044 गुरु 16/03/2044 शनि 15/05/2044 बुध 09/07/2044 केतु 31/07/2044 शुक्र 03/10/2044 सूर्य 22/10/2044 चंद्र 23/11/2044	गुरु 07/03/2045 शनि 08/07/2045 बुध 27/10/2045 केतु 11/12/2045 शुक्र 20/04/2046 सूर्य 29/05/2046 चंद्र 02/08/2046 मंगल 16/09/2046 राहु 11/01/2047	शनि 07/06/2047 बुध 16/10/2047 केतु 09/12/2047 शुक्र 11/05/2048 सूर्य 26/06/2048 चंद्र 11/09/2048 मंगल 04/11/2048 राहु 23/03/2049 गुरु 25/07/2049	बुध 19/11/2049 केतु 06/01/2050 शुक्र 24/05/2050 सूर्य 04/07/2050 चंद्र 11/09/2050 मंगल 30/10/2050 राहु 03/03/2051 गुरु 21/06/2051 शनि 30/10/2051

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	9
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

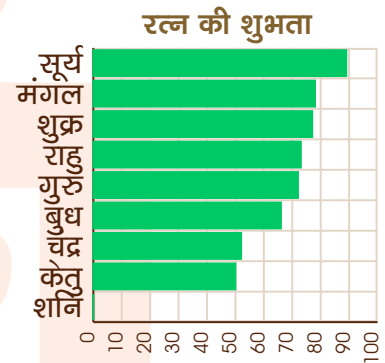
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	89%	धन, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	78%	पराक्रम, भाग्योदय, सुख
हीरा	शुक्र	77%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	73%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	72%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
पन्ना	बुध	66%	पराक्रम, धनार्जन, धन
मोती	चंद्र	52%	सन्तति सुख, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	50%	धनार्जन, पराक्रम
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	24/11/2003	77%	28%	78%	72%	72%	89%	0%	80%	56%
सूर्य	23/11/2009	100%	58%	84%	66%	78%	64%	0%	61%	25%
चंद्र	24/11/2019	95%	64%	78%	72%	72%	77%	0%	61%	25%
मंगल	24/11/2026	95%	58%	91%	53%	78%	77%	0%	61%	56%
राहु	23/11/2044	77%	28%	66%	66%	72%	83%	0%	86%	25%
गुरु	23/11/2060	95%	58%	84%	53%	84%	64%	0%	73%	50%
शनि	24/11/2079	77%	28%	66%	72%	72%	83%	2%	80%	25%
बुध	23/11/2096	95%	28%	78%	78%	72%	83%	0%	73%	50%
केतु	25/11/2103	77%	28%	84%	66%	72%	83%	0%	61%	62%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/10/1991-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

शुभ
अशुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

शत्रु व रोग मुक्ति
दुर्घटना से बचाव
व्यय
सुख हानि
सन्तति

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है अतः तृतीय भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को आप निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको समय समय पर इच्छित सफलता प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आवश्यक सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा अपने परिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी इसके प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी। साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी परन्तु पित गर्मी अथवा रक्त विकार संबंधी किसी परेशानी से शारीरिक कष्ट हो सकता है। नवम भाव पर सप्तमस्थ दृष्टि से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म करने पर ही आप अधिक विश्वास करेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगे। लेकिन पिता के स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे सम्मानीय पुरुष होंगे तथा अन्य जनों से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा जिससे आप उत्साह पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में पद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को थोड़ा विलम्ब से सन्तान प्राप्त होती है या फिर उसके होने में आंशिक रूप में व्यवधान उपस्थित होता है और जातक को पुत्र सन्तान की प्रायः चिन्ता बनी रहती है। ऐसे जातक को सन्तान सुख अल्प मात्रा में ही मिलता है और अक्सर सन्तान से दूर रहता है। जातक को वंश वृद्धि के लिए थोड़ी बहुत चिन्ता बनी रहती है। विद्याध्ययन में आंशिक रूप से रुकावट आती है। पर कालान्तर में व्यवधान स्वतः समाप्त हो जाता है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी किसी भी समय कष्टमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से जातक को अपयश मिलता है। घर की सुख-शान्ति में थोड़ा अभाव रहता है और जातक के मित्रगण स्वार्थी होते हैं। वे समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जातक के शत्रु षड्यन्त्र रचते रहते हैं, जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। इस योग के प्रभाव से लाभ मार्ग में आंशिक रूप से बाधा, चिन्ता एवं कष्ट के कारण जीवन संघर्षमय बना रहता है।

इसके प्रभाव से जातक को गुप्त रोग व्याधि कभी घेर लेती है। जिसमें धन अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है और जातक द्वारा संग्रहीत सम्पत्ति को प्रायः दूसरे लोग हरण कर लेते हैं। जातक वृद्धावस्था को लेकर थोड़ा बहुत चिन्तित रहता है। कभी जातक के मन में सन्यास ग्रहण करने की भावना जागृत हो जाती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक को राजनीति में बहुत सफलता मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भृत्यकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(24/11/2019 - 24/11/2026)

मंगल की महादशा 24/11/2019 को आरम्भ होगी और 24/11/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्षों की होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल तृतीय भाव में स्थित है। नवम, दशम तथा षष्ठम भावों पर मंगल की दृष्टि है। इसके पूर्व चन्द्र की 10 वर्ष की दशा चल रही थी। आपको शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, मातृ-पक्ष से लाभ आदि की संभावना है। मंगल की इस दशा के दौरान आपको शक्ति तथा ओज और भाइयों से सुख मिलेगा और जीवन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आप का स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवन-शक्ति तथा ऊर्जा प्रचुर मात्रा में होगी और आप अत्यन्त उत्साही होंगे। आपमें पहल-शक्ति तथा साहस भी पर्याप्त होगा और आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति होगी। आपको सरदर्द, ज्वर, संक्रामण, पित्त-दोष अथवा गले से सम्बद्ध मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। किन्तु, ये मामूली बीमारियाँ हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आप कठिन परिश्रम से अपने भविष्य का निर्माण स्वयं करेंगे। आप प्रगति करेंगे और आपकी कमाई अच्छी होगी। आपके प्रतिद्वन्दी आपके मार्ग में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं और आपके मातृ-पक्ष के सम्बन्धियों के लिए समय कष्टकर हो सकता है। आपके लिए अदालत के मामलों और मुकदमों का निपटारा करा लेना उचित होगा। अपनी जीविका के लिये यान्त्रिकी अभियंत्रण, सैन्य सेवाओं, चिकित्सा-कार्य, दन्तचिकित्सा-कार्य औद्योगिक-प्रतिष्ठानों में रोजगार आदि का चयन कर सकते हैं। लौह-इस्पात, खेल के सामान, ताम्बे, खनिज पदार्थों तथा दवाओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ होगा, उनकी पदोन्नति होगी, उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा और कार्य स्थान में वातावरण अनुकूल रहेगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों के व्यवसाय में उन्नति तथा आय और लाभ में वृद्धि होगी। आप अपने ही प्रयासों से बहुत प्रगति करेंगे।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको सुखों की प्राप्ति होगी। इस अन्तर्दशा के फलस्वरूप, सुख-आराम तथा वाहनों की प्राप्ति की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको कुछ आर्थिक पुरस्कार प्राप्त होगा। गणित, विज्ञान, संचार-माध्यमों से सम्बद्ध विषय आदि में आपकी रुचि होगी। आप खेलों, वाद-विवादों (चर्चा-परिचर्चाओं) तथा बाहरी गतिविधियों में भाग लेंगे। आपको परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। आपके प्रतिद्वन्दी आपको कड़ी टक्कर देंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

परिवार :

अपने बच्चों के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। वे अपने कार्यों में बहुत अच्छा करेंगे, आपको उनसे सुख मिलेगा तथा आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। आपके जीवन साथी को समृद्धि तथा सम्बन्धियों से सहायता की प्राप्ति और जीवन में उन्नति होगी। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपकी माता की यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों में व्यय होगा। आपके पिता को साझेदारी और यात्रा में लाभ होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सफलता तथा सुख मिलेगा और निवेश में लाभ होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके मित्र बहुत अच्छे स्वभाव के होंगे जो आपकी बड़ी सहायता करेंगे और आपका उनके साथ समय सुखद बीतेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति और भाई से सुख की प्राप्ति होगी और आपकी यात्राएँ होंगी। राहु के कारण कुछ समस्याएँ आएंगी। बृहस्पति की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको लाभ मिलेगा। लग्नेश शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको शक्ति, अधिकार, यश, ख्याति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आप यात्रा पर जाएंगे। बुध के कारण आपकी शिक्षा उत्तम होगी और जीवन में कुछ परिवर्तन होंगे। केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएँ उत्पन्न करेगी। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और सूर्य की अन्तर्दशा के कारण साझेदारी में लाभ होगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(17/10/2024 - 18/12/2025)**

आपके लिए मंगल की महादशा 24/11/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 17/10/2024 को प्रारंभ होकर 18/12/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपका जीवन सुविधाओं से युक्त होगा। उत्तम वस्त्र, इत्र और विलास के साधन उपलब्ध रहेंगे। कला में प्रवीण होंगे। आपको पैसे का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। विवाहित जीवन सुखी होगा। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। व्यापार में लाभ होगा। घरेलू जीवन सुखी रहेगा, संतान से खुशी मिलेगी।

आपके जीवनसाथी का पारिवारिक जीवन सुखी होगा। आपके पिता उच्चपद और सम्मान पाएंगे। माता को मानसिक शांति और आराम का संकेत है। भाई-बहनों को धन का लाभ होगा, छोटी यात्राएं हो सकती हैं, बहुत से मित्र बनेंगे।

आपकी संतान परीक्षा में सफलता प्राप्त करेगी। अगर वे सेवारत हैं तो विज्ञापन क्षेत्र में सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं, धनागम होगा। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं का प्रभाव बढ़ेगा, धन में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(18/12/2025 - 24/04/2026)**

आपकी मंगल की महादशा 24/11/2019 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 18/12/2025 को प्रारंभ होकर 24/04/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपको धन की प्राप्ति होगी। रुके हुए काम पूर्ण होंगे। प्रसन्नता मिलेगी। आपकी वाक्शक्ति उत्तम रहेगी; व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धन की बचत कम होगी। धन कमाने के लिए परिश्रम करना होगा। धर्म, अध्यात्म और पराविद्या में रुचि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी मगर कुछ उतार-चढ़ाव रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को धन, प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त होंगे। पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता को कार्यों में सफलता मिलेगी। भाई-बहनों को सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे, धन कमाएंगे। आपकी संतान सम्मानित होगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन, सफलता और

महादशा :- राहु
(24/11/2026 - 23/11/2044)

राहु की महादशा 24/11/2026 को आरम्भ और 23/11/2044 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु पंचम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि ग्यारहवें भाव पर है। इसके पहले आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको इस दशा के दौरान सुख, अचल सम्पत्ति में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा, तकनीकी शिक्षा की प्राप्ति



होगी और जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका शक्ति मिलेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, आँत सम्बन्धी समस्या, आल्सर और घाव, चर्मरोग और उदर-रोग (औरतों को) आदि बीमारियाँ हो सकती है। आपको बच्चे के जन्म के समय सावधान रहना चाहिए। कुछ सावधानी बरतकर इनमें से कुछ बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सृढ़ होगी। सहे तथा निवेश से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। ग्यारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आपके मित्र होंगे जो आपके लिए लाभदायक होंगे। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेख, कम्प्यूटर राजनीति, खेल, प्रबन्धन, पदाधिकारी कापद आदि का चयन कर सकते हैं। लोहा-इस्पात, चमड़े के सामान, दवा, एण्टीवायोटिक्स, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों का कुछ परिवर्तन, आय में अचानक वृद्धि, कार्य-स्थान में अनपेक्षित प्रगति और स्थिति कठिन होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की भी अनपेक्षित प्रगति, अचानक लाभ और हानि होगी। आप अपने काग्र अथवा व्यावार में परिवर्तन कर सकते हैं। कोई भी परिवर्तन लाभदायक होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको लाभ व सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद के लेन-देन के सभी मामलों के लिए यह समय लाभदायक है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। यात्रा में सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, प्रबन्धन, कम्प्यूटर विज्ञान, विधि, दवा, खेल आदि से संबंधित विषय आपके लिए अच्छा होगा। आप दृढ़प्रतिज्ञ हैं और आपको यश तथा ख्याति मिलेगी। परमविज्ञान में भी आपकी रुचि होगी।

परिवार :

आपके बच्चों को सफलता तथा समृद्धि मिलेगी और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ और अर्थ-लाभ का अवसर मिलेगा और उनकी इच्छा की पूर्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता को लाभ और समृद्धि मिलेगी जबकि आपके पिता को समृद्धि मिलेगी तथा उनकी यात्रा और तीर्थाटन होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की यात्रा होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और यातायात में लाभ होगा और बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा और वाणिज्य-व्यापार में लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा तकनीकी शिक्षा मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा आपके लिए भाग्यशाली होगा यद्यपि विरोधियों के

कारण कुछ मामूली समस्या हो सकती है। शनि की महादशा कष्टकर सिद्ध होगी किन्तु कुछ भौतिक लाभ और यात्रा हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी जिसमें उनकी यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको लाभ तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में पारिवारिक सुख और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सम्पत्ति, सुख और सफलता मिलेगी जबकि मंगल के फलस्वरूप सुख, बच्चे का जन्म तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी।



**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(24/11/2026 - 06/08/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/11/2026 को प्रारंभ होकर 23/11/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 24/11/2026 को प्रारंभ होकर 06/08/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है।

इस अवधि में आप भावुक हो सकते हैं। प्रेम-प्रसंग में सफलता मिल सकती है। समाज में भी सफल रहेंगे जिससे खुशी मिलेगी। सट्टेबाजी, शेयर आदि में लाभ हो सकता है। हृदय रोग से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(06/08/2029 - 30/12/2031)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/11/2026 को प्रारंभ होकर 23/11/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 06/08/2029 को प्रारंभ होकर 30/12/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदर्ते, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। लग्न में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुख-सुविधासंपन्न होंगे। व्यायाम करेंगे, जिससे शरीर हष्ट-पुष्ट रहेगा। उत्तम वस्त्र धारण करेंगे, प्रसन्नचित्त रहेंगे। यह अंतर्दशा आपके और आपके परिवार के लिए बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जाप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।